

अब्बू खाँ की बकरी

कथा जाकिर हुसैन वित्र पूजा पोट्टनकुलम

> हिमालय पहाड़ का नाम तुमने सुना ही होगा। इससे बड़ा पहाड़ दुनिया में कोई नहीं है। यह हजारों मील तक फैला हुआ है। इस पहाड़ के अन्दर वादियों में बहुत सी बस्तियाँ हैं। ऐसी ही एक बस्ती अल्मोड़ा है। अल्मोड़ा में एक बड़े मियाँ रहते थे अब्बू खाँ। अकेले आदमी थे। बस एक दो बकरियाँ रखते। दिन भर उन्हें चराते फिरते।

अब्बू ख़ाँ गरीब थे, बड़े बदनसीब। उनकी सारी बकरियाँ कभी—न—कभी रस्सी तुड़ा कर रात को माग जाती थीं। पहाड़ी बकरी बँधे—बँधे घबरा जाती है। ये बकरियाँ भाग कर पहाड़ में चली जाती थीं। वहाँ एक भेड़िया रहता था। वो उन्हें खा जाता था। मगर अजीब बात है, न अब्बू खाँ का प्यार, न शाम के दाने का लालच उन बकरियों को भागने से रोक पाता था, न भेडिए का डर। शायद यह बात हो कि पहाडी जानवरों के मिज़ाज में आज़ादी से

बहुत मुहब्बत होती है। यह अपनी आज़ादी किसी दामों पे देने को राज़ी नहीं होते। जब अब्बू खाँ की बहुत सी बकरियाँ यूँ भाग गईं तो

बेचारे बहुत उदास हुए और कहने लगे, "अब बकरी न पालूँगा। जिन्दगी के थोड़े दिन और हैं, बिना बकरियों के ही कट जायेंगे।" मगर तनहाई बुरी चीज़ है। जब अब्बू खाँ से बेबकरी न रहा गया, वह कहीं से एक बकरी मोल ले आए। अब्बू खाँ ने सोचा कि कम-उम्र बकरी

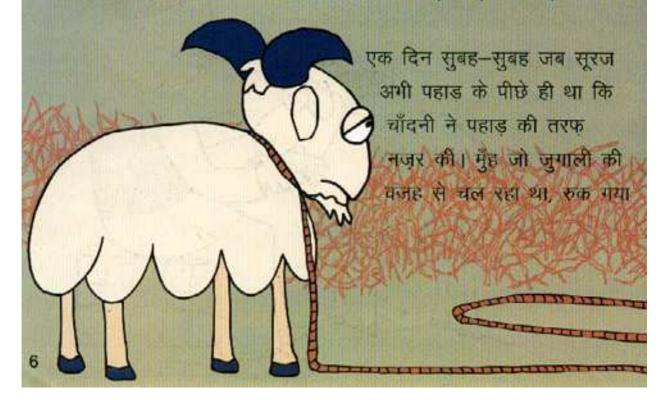
लूँगा तो शायद हिल जाए और उसे जब पहले ही से अच्छे-अच्छे दाने-चारे की आदत पड़ जाएगी तो फिर यह पहाड़ का रुख न करेगी।

यह बकरी थी बहुत खूबसूरत। रंग उसका बिल्कुल सफ़ेद था। बाल लम्बे-लम्बे थे। छोटे-छोटे नुकीले सींग, ऐसे मालूम होते थे कि किसी ने बढ़िया लकड़ी में खूब मेहनत से तराश कर बनाए हो। बड़ी सुन्दर आँखें। प्यार से अब्बू खाँ का हाथ चाटती थी। दूध चाहे तो कोई बच्चा दुह ले। अब्बू खाँ तो उस पर लट्टू हो गए थे। उसका नाम चाँदनी रखा और दिन भर उससे बातें करते रहते थे।

अब्बू खाँ ने यह सोच कर कि शायद बकरियाँ मेरे घर के तंग आँगन में पबरा जाती हैं, अपनी इस बकरी चाँदनी के लिए नया इन्तज़ाम किया था। घर के बाहर उनका एक छोटा सा खेत था। उसके चारों तरफ उन्होंने काँटे की बाड़ बनाई। इसके बीच में चाँदनी को बाँधते थे। और रस्सी खूब लम्बी रखी थी ताकि मजे से इधर-उधर घूम सके।



मगर अब्बू खाँ धोखे में थे। आज़ादी की ख़्वाहिश इतनी आसानी से दिल से नहीं निकलती। पहाड़ और जंगल में रहने वाले आज़ाद जानवरों का दम घर की चारदीवारी में घुटता है। काँटों से घिरे हुए खेत में भी उन्हें चैन नसीब नहीं होता। कैद—कैद सब एक सी।



और चाँदनी ने दिल में कहा, "वो पहाड की चोटियाँ कितनी इसीन हैं। वहाँ की हवा और यहाँ की हवा का क्या मुकाबला। गर्दन में आठ पहर ये कम्बख्त रस्सी।"

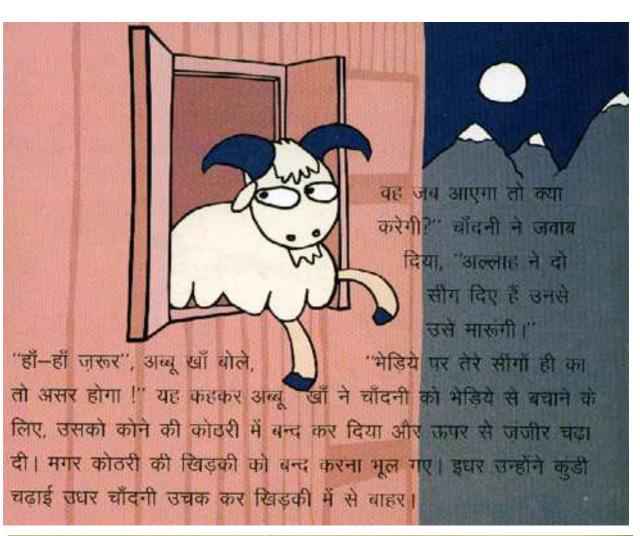
बस, इस ख्याल का आना था और वॉदनी अब वह पहली वाली चॉदनी न थी। न उसे हरी-हरी

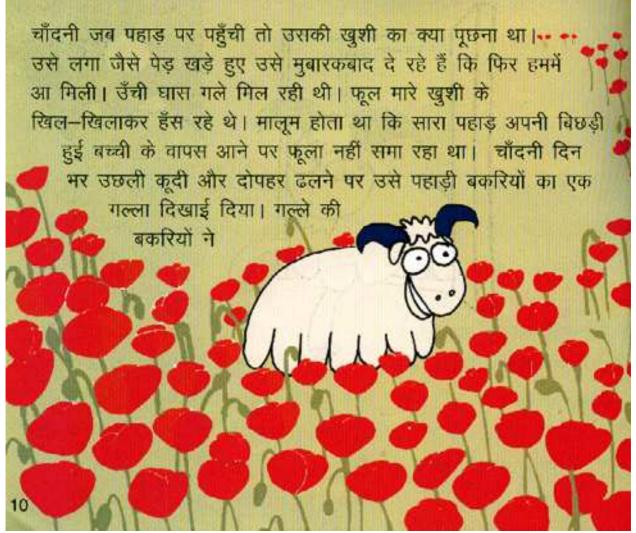
घास अच्छी लगती थी न पानी मज़ा देता था, न अब्बू खाँ की लग्बी दास्तानें उसे भाती थीं। दिन पर दिन दुबली होने लगी। दूध घटने लगा। हर वका मुँह पहाड़ की तरफ रहता और रस्सी को खींचती और अजीब दर्द भरी आवाज में "में, में," चिल्लाती।

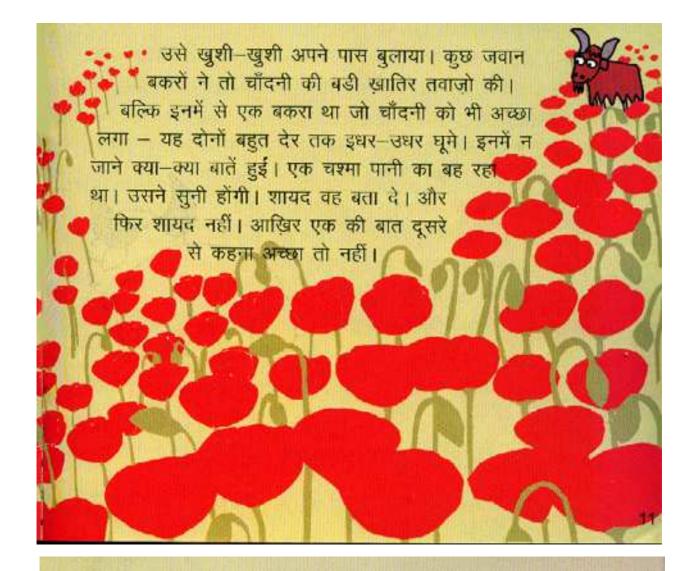


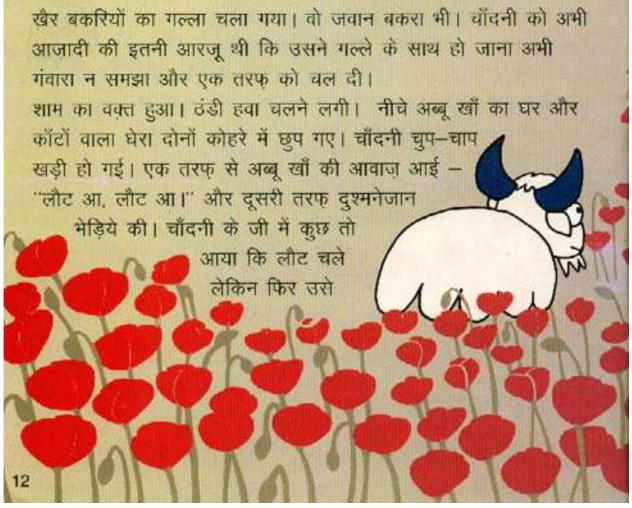
एक दिन सुबह जब अब्बू खाँ ने दूध दुह लिया तो चाँदनी ने उनकी तरफ मुँह फरें। और बकरियों वाली अपनी जुबान में कहा, "अब्बू खाँ मियाँ, मैं अब तुम्हारे पास रहूँगी तो मुझे बड़ी बीमारी हो जाएगी। मुझे तो तुम पहाड पर चले जाने दो।" अब्बू खाँ मी बकरियों की बोली समझने लगे थे। चिल्ला कर बोले, "या अल्लाह, ये भी जाने को कहती है, ये भी।" अब्बू खाँ वहीं घास पर बकरी के पास बैठ गए और निहायत गमगीन आवाज में पूछा, "क्यूँ, बेटी चाँदनी, तू भी मुझे छोड़ना चाहती है।" बाँदनी ने जवाब दिया, "हाँ, अब्बू खाँ मियाँ। चाहती तो हूँ।" "अरे तो क्या तुझे चारा नहीं मिलता, या दाना पसन्द नहीं।" "नहीं—नहीं मियाँ, मुझे दाने की कोई तकलीफ नहीं" चाँदनी ने जवाब दिया। "तो फिर क्या रस्सी छोटी है? में और लम्बी कर दूंगा।" चाँदनी ने कहा, "इससे क्या फायदा!" "तो आखिर क्या बात है? तू चाहती क्या है?" चाँदनी बोली, "कुछ नहीं, बस मुझे तो पहाड पर जाने दो।" अब्बू खाँ नै कहा, "अरी कम नसीब, तुझे ये खबर भी है कि वहाँ मेडिया रहता है!

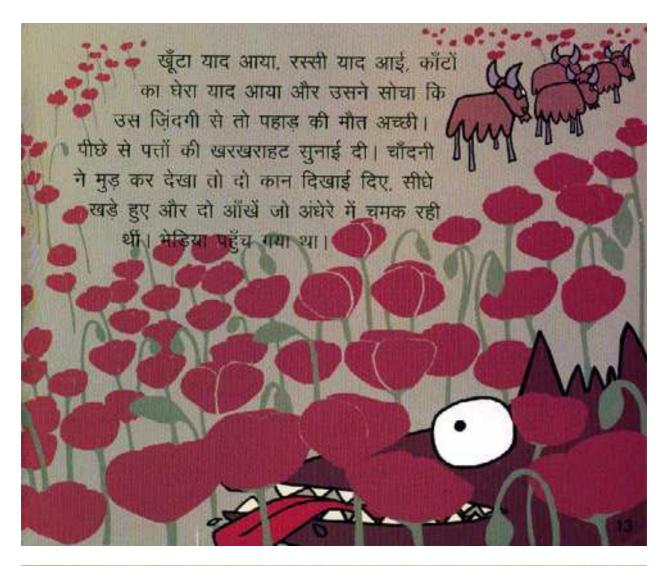
17











चाँदनी ने जो उसकी तरफ़ रुख़ किया तो वो मुस्कराया और बोला, "ओ हो, अब्बू खीं की बकरी है। ख़ूब खिला—पिलाकर मोटा किया है।" ये कह कर उसने अपनी लाल—लाल जुबान अपने नीले—नीले होठों पर फेरी। चाँदनी ने सोचा, ख़ामखाँ रात भर क्यूँ लड़ूँ, अभी क्यों न अपने आप को शहीद कर दूँ। लेकिन फिर ख्याल आया कि नहीं। अपना सर झुकाया, सींग आगे को किये और पैंतरा बदल कर भेड़िये के मुकाबिल आई कि बहादुरों का यही शेवा है। वह खूब जानती थी कि बकरियाँ भेड़िये को नहीं मार सकतीं। वह तो सिर्फ़ ये चाहती थी कि अपनी बिसात के मुताबिक मुकाबला करे। जीत—हार पर अपना काबू नहीं, वह अल्लाह के हाथ है।

चाँदनी ने सींग सम्भाले और वो—वो हमले किए कि भेड़िये का जी जानता होगा। सितारे एक—एक करके गायब हो गए। चाँदनी ने अपना ज़ोर दुगना कर दिया। सुबह का वक्त नज़दीक आया। एक मुर्गे ने कहीं से बाँग दी। नीचे बस्ती में से अज़ान की आवाज़ आई। मुअज़िज़न आखिरी दफ़ा, "अल्लाहोअकबर" कह रहा था कि चाँदनी बेदम ज़मीन पर गिर पड़ी। इसके सफेद बालों का लिबास खून से बिल्कुल सुर्ख था।

